॥ श्री ॥

जयधवला

JAYADHAVALAA

आ. वीरसेन-जिनसेन · ९वीं शती · अभिलेख ३६/९०

श्री एलाचार्य स्वामी → **आ. वीरसेन-जिनसेन** → श्री श्रीधराचार्य

संक्षिप्त परिचय

कसायपाहुड पर वीरसेन स्वामी द्वारा आरम्भ और शिष्य जिनसेन द्वारा पूर्ण की गई महाटीका — कषाय-सिद्धान्त का अगाध समुद्र।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

जयधवला — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ३६ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. वीरसेन-जिनसेन; रचना-काल ९वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक १४५) के अनुसार इनका समय ७७०–८२७ है तथा गुरु श्री एलाचार्य स्वामी। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "धवलाटीका आदि १,००,००० श्लोक प्रमाण टीका के कर्ता" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में आदिपुराण, महापुराण (उत्तरपुराण), धवला, महाधवला, आदिपुराण (संस्कृत पूर्ति), वर्धमानचरित्र परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

आदिपुराण · महापुराण (उत्तरपुराण) · धवला · महाधवला · आदिपुराण (संस्कृत पूर्ति) · वर्धमानचरित्र

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ३६ — मूल छायाचित्र